बी०ए० II
समाज शास्त्र

PAGE NO.
DATE: 1/2/2022

पर्यावरण प्रदूषण

वर्तमान मानव की एक प्रमुख समस्या 'पर्यावरण प्रदूषण' की है यह समस्या अन्तराष्ट्रीय समस्या का रूप ले चुकी है। मानव की विकासात्मक क्रियाओं के परिणाम पर्यावरण प्रदूषण का जन्म हुआ है।

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ-

मनुष्य एंव प्रकृति के बीच अटूट सम्बन्ध होता है मनुष्य की समस्त क्रियाए प्रकृति में ही सम्भव है यह प्रकृति के विभिन्न तत्वो को ग्रहण करता है। वह अपशिष्ट पदार्थ को वातावरण में छोड़ता है लेकिन वर्तमान में मनुष्य में संयम का आभाव है। वह प्रकृति से अंधाधुंध दोहन तथा अपशिष्ट वातावरण में तेजी से उत्सर्जित करता है।

परिभाषा -

(राष्ट्रीय पर्यावरण शोध के अनुसार — "मनुष्य के क्रिया कलापो से उत्पन्न अपशिष्टो के रूप पदार्थ एंव उर्जा विमोचन से प्रकृति पर्यावरण में होने वाला परिवर्तन ही प्रदूषण है।"

पी०डी० शर्मा के अनुसार — "प्रदूषण जल हवा मृदा आदि की भौतिक रासायनिक या जैविक का वाछनिय परिवर्तन है। जो महसूस किया जाता है जो जीवन

पर नुकसानदेह प्रभाव डालकर स्वस्थ जीवों का जीवन बना देता है।"

ए० पी० कौशिक — "प्रदूषण वायु जल एवं स्थल की भौतिक रासायनिक और जैविक विशेषताओं का यह अवांछनीय परिवर्तन है जो मनुष्य और उसके लिये लाभदायक जंतुओं जैसे औद्योगिक संस्थानों दूसरे कच्चे माल इत्यादि को किसी भी रूप में हानि पहुंचाता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा मानव के असंयमित नगरीकरण के कारण पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण —

औद्योगिक अवशिष्ट घर कूड़ा कचरा आदि जल की शुद्धता का स्तर निरन्तर घटता रहा है। कलकारखानों वाहनों के कारण ध्वनि प्रदूषण कर रहे हैं। जो निम्न प्रकार है।

(1) बढ़ता औद्योगीकरण — सभ्यता के विकास के साथ औद्योगीकरण में तेजी से वृद्धि हुई है दूसरी ओर कलकारखानों का धुआं, साधनों का उपयोग आदि पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। कुछ खास उद्योग-चमड़ा उद्योग चीनी उद्योग पेट्रोकेमिकल आदि-वाले क्षेत्रों में दुर्गन्ध की भरमार है।

नगरीकरण — नगरीकरण उस प्रक्रिया की ओर संकेत करता है। जिसमें नगरों का निर्माण होता है। उद्योगों की स्थापना एवं प्रसार से विकास होता है जब नगर है।

PAGE NO.
DATE: / /

वहा उद्योग धन्धे स्थापित होते है। फिर दोषपूर्ण नाली आदि गन्दी बस्तियो का विकास होता है।

वनो का कटाव — जहा पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में वनो का होना अत्यन्त है वही वन क्षेत्रो में निरन्तर कमी आ रही है। नवीन बस्तिया बसाने सुख-सुविधा की वस्तुओ इमारती लकडी की आवश्यकता का विनाश होता है।

बढ़ती जनसंख्या — पृथ्वी की जनसंख्या प्रतिवर्ष ८६ मिलियन की दर से बढ़ रही है। भारत में जनसंख्या वृद्धि दर 1.91 प्रतिशत प्रतिवर्ष है। 2001 के जनगणना अनुसार भारत की जनसंख्या 102.7 करोड पर पहुंच गई इन सबो के संयुक्त से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हुई।

संसाधनो की कमी — पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रभाव कारण संसाधन कमी कही जाती है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ व्यक्ति उपलब्धता कम होती जा रही है। 1971 में प्रति व्यक्ति 0.60 हेक्टेयर कृषि उपलब्ध थी जो वर्ष 2001 में घटकर 0.33 हेक्टेयर हो गयी 2050 तक भारत के वनो का पूर्णतः विनाश हो जायगा।

प्राकृतिक आपदाएँ — प्राकृतिक आपदाओ का पर्यावरण प्रदूषण से सम्बन्ध देखा जाता है समय पर वर्षा न होना भूकम्प भयंकर बाढ़ सूखा पडना आदि के चलते मनुष्य में अनेक बिमारियो का फैलाव हुआ है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान